RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-08
August-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i08.007

भारत - सोवियत संघ संबंध (1947 से 1991 तक)

Arbind Kumar

Ex. Assistant Professor In Political Science and Research Associate, Gandhian Study Centre, DAV College, Abohar, Punjab

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 17 August 2020

Keywords
भारत-सोवियत संघ, राजनीती, संयुक्त राष्ट्र

***Corresponding Author**
Email: bindupoonia94[at]gmail.com

ABSTRACT

वैसे तो भारत ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में आजादी से पहले ही भाग लेना शुरू कर दिया था | क्योंकि भारत सयुंक्त राष्ट्र का मूल व सक्रिय मैंबर रहा है | परंतु तब भारत के नाम से अग्रेजों द्वारा शासन संचालित होता था | इस लिए भारत के ज्यादा किसी देश के साथ करीबी संबंध नहीं हुए | पर आजाद होने के बाद भारत ने अपनी भूमिका को विश्व स्तर पर स्वीकार किया | उस समय नव भारत के सामने कई आथिर्क, राजनीतिक और सैनिक गूट खड़े थे |पर भारत के पास इस समय केवल दो ही विकल्प थे या तो वह किसी एक में शामिल हो जाऐ और या फिर किसी में भी शामिल ना हो | भारत ने यही किया कि वह किसी भी गुट में शामिल नहीं हुआ, क्योंकि किसी एक में शामिल होकर दूसरे को भारत नाराज नहीं कर सकता था | एक कारण यह भी था की किसी भी गुट में शामिल होके भारत अपने ऊपर किसी बाहरी शक्ति की बंदिशे नहीं चाहता था | इस कारण भारत ने दोनों गुटों से अलग रहने की नीति अपनाई | ताकि वह अपना स्वतंत्र रहकर विकास कर सके | भारत ने अपनी इस नीति को गुटनिरपेक्षता का नाम दिया | पर इस नीति का यह मतलब बिलकुल नही था कि भारत ने अपने आप को अंतर्राष्ट्रीय राजनीति से अलग थलग कर लिया था | भारत सभी देशों से सम्मानपूर्वक संबंध कायम करना चाहता था, ताकि अपना आथिर्क, राजनीतिक, सामाजिक और सैनिक विकास कर सके | उस समय अमेरिका और सोवियत संघ जैसे देश सबसे शक्तिशाली देश थे, भारत इन दोनों देशों का सहयोग प्राप्त कर अपनी विश्व स्तर पर पहिचान कायम करना चाहता था | पर शुरुआत से ही भारत के संबंध अमेरिका से ज्यादा सोवियत संघ से ज्यादा अच्छे रहे हैं | दोनों की विचारधारा में फर्क होने के बाद भी संबंध हमेशा सौहार्द्र पूर्ण रहे हैं | और वर्तमान समय तक भी बने हुए हैं |

भारत और सोवियत संघ के संबंधो की सूरूआत -:

भारत और सोवियत संघ के संबधों का ऐतिहासिक महत्व रहा है | भारत के सोवियत संघ के साथ संबंध राजनीतिक होने के साथ - साथ संस्कृतिक भी रहे हैं | जब भारत ब्रिटिश सामराज्यवादी शक्ति का शिकार था, तब यहाँ के लोगों को स्वंतत्रता के लिए 1917 की रूसी क्रांति ने काफी प्रभावित किया था | भारतीयों के अंदर स्वाधीनता के लिए जनून भरने का काम किया | 1927 में भारतीय कांग्रेस के नेता पंडित जवाहरलाल नेहरू सोवियत संघ की यात्रा पर गयें और वह वहाँ की विदेश नीति से काफी प्रभावित हुए | सोवियत संघ ने भी भारत की स्वतंत्रता का समर्थन किया | साथ में भविष्य में साथ देने का वादा भी किया | भारत व सोवियत संघ किसी भी देश की सामराज्यवादी नीति का विरोध करते हैं | साथ ही साथ हर देश की स्वतंत्रता का समर्थन करते हैं | या हम यूँ भी कह सकते हैं कि उस समय सोवियत संघ का हौंसला ही भारत की उड़ान थी |

नेहरू काल में भारत- सोवियत संघ संबंध (1947-1964) -:

पंडित नेहरू जी भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने | यह एक विज्ञानिक सोच और लोकतंत्रीय समाजवाद के समर्थक थे | नेहरू जी ने गुटनिरपेक्षता के सिधान्त को जन्म दिया | इस नीति के सहारे ही नेहरू जी ने शीत युद्ध के समय भारत को इससे दूर रखा | भारत की यही कोशिश थी कि अब किसी भी गुट में शामिल ना होकर सोवियत संघ और अमेरिका के साथ मैत्री पूर्ण संबंधों का निर्माण किये जाऐ | भारत का सामाजवाद के प्रति झुकाव और सामराज्यवादी नीति का विरोध दोनों देशों को करीब लेकर आ रहे थे | पर इन साकारात्मक संबंधों के बावजूद स्टालिन के समय भारत के साथ संबंध ज्यादा अच्छे नहीं रहे | 1949 में नेहरू जी ने सोवियत संघ की साम्यवादी नीति को ऐसीया के देशों के लिए खतरा बताया | स्टालिन ने भी साम्यवादी विरोधी देशों को खुद के लिए खतरा माना | पर 1949 में दोनों देशों के संबंधों में एक नया मोड़ आया, जब दोनों के बीच पहला व्यापारिक समझोता हुआ |

RRIJM 2015, All Rights Reserved

साम्यवादी चीन को सबसे पहले भारत के द्वारा ही मान्यता देने के कारण सोवियत संघ का भारत के प्रति रूख बदला | **1950 में कोरिया संकट** के समय दोनों देशों के बीच खटास पैदा हो गई | क्योंकि इस समय भारत ने अमेरिका का पक्ष लिया तो सोवियत संघ का खिलाफ होना स्वाभाविक था | **जापान शांति संधि 1951** पर भारत ने सोवियत संघ का समर्थन किया और इसपे हस्ताक्षर नहीं किये | भारत में पैदा हुई कश्मीर समस्या पर सोवियत संघ हमेशा भारत के साथ खड़ा नज़र आया | 1953 में स्टालिन की मौत हो गई | इसके बाद दोनों देशों के संबंधों का नया पड़ाव शुरू हुआ |

अब सोवियत संघ की कमान खुश्चेव के हाथों में थी | इसने स्टालिन के कठोर नियमों में बदलाव कर उनका उदारीकरण किया | 1954 में अमेरिका ने पाकिस्तान को सैनिक सहायता दी, जिस का भारत ने विरोध जताया, साथ में इस मुद्दे पर सोवियत संघ का समर्थन प्राप्त था | **हिन्द चीन समस्या 1954** के समाधान के लिए भारत ने छे: सूत्री प्रस्ताव पेश किया | जिसको सोवियत संघ द्वारा अमेरिका विरोधी मानकर खुद को भारत के करीब ले आया | भारत - चीन के बीच हुए पंचशील समझौते को सोवियत संघ ने साम्यवादी देशों के हित में बताया | अमेरिका ने साम्यवादी विचारधारा का सामना करने के लिए **सैनिक गुट दक्षिण पूर्व एशिया संधि संगठन (SEATO)** और **केन्द्रीय संधि संगठन (CENTO)** या **मध्य पूर्व संधि संगठन (METO) बगदाद पैक्ट 1955** के संगठनों का भारत ने विरोध किया | 1955 में नेहरू जी सोवियत संघ की यात्रा पर गए | वहां नेहरू जी ने कहा कि भारत - सोवियत मैत्री संबंध पंचशील द्वारा निर्धारित होते रहेगे | दोनों देश पारस्परिक लाभ और कल्याण के लिए सहयोग करेंगे | 1955 में ही सोवियत साम्यवादी दल के महासचिव और प्रधानमंत्री बुलगानिन भारत यात्रा पर आये | बुलगानिन ने अपने आर्थिक और विज्ञानिक सहयोग भारत को देने का वादा किया और वही खुश्चेव ने कहा कि हम अपनी रोटी का अंतिम टुकड़ा भी आप के साथ बांट कर खाएंगे | खुश्चेव ने कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बताया और कहा कि अगर आप हमें पहाड़ की चोटी पर खड़े होकर भी पुकारेंगे तो भी हम आप की मदद के लिए हाज़िर हो जाऐगे | 1955 में सोवियत संघ ने गोवा के मसले पर भारत का समर्थन किया | **1956 में स्वेज़ नहर संकट** के समय दोनों के मत सामान थे, पर हंगरी विवाद पर दोनों के बीच कड़वाहट पैदा हो गई | पर अंत में भारत ने सोवियत संघ के खिलाफ प्रस्तावित विचार पर अपना समर्थन ना देकर सोवियत संघ का साथ दिया और गिलेसिकवे दूर किये | **1961 में गोवा मुद्दे** पर भारत का साथ दिया और सयुंक्त राष्ट्र में ऊठे सैनिक कारवाई के सवाल पर सोवियत संघ ने वीटो कर दिया | 1962 में चीन के साथ युद्ध के समय चीन को युद्ध विराम लगाने के लिये सोवियत संघ ने मजबूर किया | पर एक समय सोवियत संघ ने भारत को मिग-21 सोपने से इनकार कर दिया, अंत में देना स्वीकार किया | इस के बाद भारत और सोवियत संघ के बीच सामरिक संबंधों को बढ़ावा मिला | 1963 में दोनों देशों के बीच भारत में तेल व गैस का पता लगाने पर समझौता हुआ | दोनों देशों के बीच आर्थिक और राजनीतिक संबंध मजबूत हुए | 1964 में नेहरू जी की मृत्यु और खुश्चेव का पतन हो गया |

लाल बहादुर शास्त्री काल में (1964-1966) -:

1964 में भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी बने | वही सोवियत संघ का नेतृत्व ब्रेजनेव और कोसीगिन के हाथों में आया | दोनों ने भारत के साथ अच्छे संबंधों की बात कही | 1965 में पाकिस्तान ने पहले कच्छ और फिर कश्मीर पर हमला कर दिया | इस समय भी सोवियत संघ ने भारत का साथ दिया | अमेरिका ने भारत को आक्रमणकारी देश साबित करना चाहा पर इस मद्दे पर भी सोवियत संघ ने वीटो कर दिया | चीन ने भारत को अल्टीमेटम दिया, पर सोवियत संघ के बीच में आने से युद्ध भयंकर रूप धारण करने से बच गया | सोवियत संघ ने भारत व पाकिस्तान को युद्ध विराम करने के लिए मजबूर किया | अंत में युद्ध को सफलतापूर्वक रोकने में सोवियत संघ का बड़ा हाथ था | जनवरी 1966 में भारत के प्रधानमंत्री और पाकिस्तान के वजीरे-आज़म आयूब खान के बीच सोवियत संघ के प्रधानमंत्री कोसीगिन की मध्यस्थता के कारण कजाकिस्तान के ताशकंद में समझौता हुआ | युद्ध का अंत हुआ | एक छोटे से कद के शास्त्री जी ने बड़ा समझौता किया | पर शायद वह इस समझौते से खुश नहीं थे, इसी टिस के कारण वही उनकी रहस्यमय मृत्यु हो गई |

इंदिरा गांधी के काल में (1966-1977)-:

1966 में साशन की वागडोर इंदिरा गांधी के हाथों में आई | जिन्हें भारत के सबसे मजबूत प्रधानमंत्री में से एक माना जाता है

| 1968 में सोवियत संघ द्वारा पाकिस्तान को सैनिक उपकरण देने के कारण दोनों देशों में दूरियाँ उत्पन्न हो गई | भारत ने इसका कड़ा विरोध जताया | पर सोवियत संघ ने विश्वास दिलवाया की इन हथियारों का प्रयोग भारत के खिलाफ़ नहीं किया जाएगा | 1969 में सोवियत प्रधानमंत्री कोसीगिन भारत यात्रा पर आये और इंदिरा गांधी से मुलाकात कर भारत- सोवियत संबंधों को मजबूत करने का प्रयास किया |इसी समय मार्च 1969 में चीन के साथ सीमा विवाद के समय सोवियत संघ ने भारत का समर्थन किया | पर जब सोवियत विश्वकोश ने 1970 में नेफा (अरुणाचल प्रदेश) और अक्षय चीन का हिस्सा दिखाने पर भारत ने इसका कड़े शब्दों में विरोध जताया | सितम्बर 1970 में दोनों देशों के बीच एक व्यापारिक समझौता हुआ | **1971 में बंगलादेश संकट** पैदा हुआ | वहाँ की जनता द्वारा सरकार के ख़िलाफ़ व्यापक विरोध शुरू हुआ, तो पाकिस्तान ने सैनिक कारवाई से विरोध को दबाने का प्रयास किया | जिस कारण लाखों शरणार्थी भारत आऐ | इस कारण भारत पर आर्थिक बोझ बढ़ना शुरू हो गया | भारत ने स्थिति को काबू में करने के लिए अमेरिका की मदद मांगी, अमेरिका ने मदद करने की बजाय पाकिस्तान को युद्ध के लिए उकसाया और युद्ध के समय पाकिस्तान का साथ देने के बारे में भी कहा | भारत के पास अब सोवियत संघ की मदद लेने का ही विकल्प बचा था | इसी कारण **भारत और सोवियत संघ के बीच 9 अगस्त 1971 को शांति, मैत्री और सहयोग संधि** हुई | यह संधि भारत और सोवियत संघ के रिश्तों के लिए ऐतिहासिक साबित हुई | इनहि मजबूत रिश्तों के कारण 1971 के युद्ध में अमेरिका ने ज्यादा हस्तक्षेप नहीं किया और पूर्वी पाकिस्तान का एक नया देश बंगलादेश अस्तित्व में आया | इस संधि के बाद चीन और अमेरिका को यह पता चल गया था कि अगर हमने युद्ध में पाकिस्तान का साथ दिया तो सोवियत संघ अब चुप नहीं बैठेगा | सोवियत संघ ने भी अब कश्मीर मसले पर भारत का पुर्ण समर्थन किया | जब भी भारत विरोधी प्रस्ताव सुरक्षा परिषद में लाये गये तो सोवियत संघ ने हमेशा वीटो का प्रयोग किया | 1972 में भारत और सोवियत संघ ने साथ मिलकर बंगलादेश को संयुक्त राष्ट्र का मैंबर बनाने के लिए समर्थन किया | हिन्द महासागर को शांति का क्षेत्र (zone of Peace) घोषित कराने में सोवियत संघ भारत के पक्ष में था | 1972 में दोनों देशों के बीच विज्ञानीक और तकनीकी समझौता हुआ | 29 नवम्बर 1973 में सोवियत संघ के राष्ट्रपति ब्रेजनेव भारत की यात्रा पर आये और आर्थिक और व्यापारिक समझौता किया | इस समझौते का लक्ष्य था 1980 तक दोनों देशों के बीच व्यापार 150 से 200% तक बढ़ाना | **1974 में भारत द्वारा किये गये परमाणु परीक्षण का सोवियत संघ ने समर्थन** किया | 1976 में एक और व्यापारिक समझौता हुआ | जिस कारण दोनों देशों के कारण कई चीजों का आयात - निर्यात शुरू हुआ | भारत का पहला कृत्रिम उपग्रह सोवियत संघ की सहायता से ही भेजा गया | जून 1976 में इंदिरा गांधी ने सोवियत संघ की यात्रा की | जिस कारण दोनों देशों के मैत्री संबंधों में और सुधार हुआ | दोनों देशों के यह दोस्ताना संबंध श्रीमती इंदिरा गांधी के प्रथम कार्यकाल के अंत तक और मजबूत हुए | जनता पार्टी की सरकार में भी संबंध और सुदृढ़ बने|

भारत - सोवियत संघ संबंध (1977 - 84) -:

1977 में जनता पार्टी की सरकार बनी | प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई ने सत्ता में आते ही भारत - सोवियत संघ संबंधों को और भी मजबूत करने की बात कही | अक्टूबर 1977 में मोरारजी देसाई और विदेशी मंत्री श्री अटलजी सोवियत संघ की यात्रा पर गए | दोनों देशों के बीच कई अहम मुद्दों पर बात हुई | जिस में पहली वाली स्थिति बनाये रखने और साथ ही साथ हिंद महासागर को शांति का क्षेत्र (Zone of Peace)बनाये रखने के समर्थन के साथ - साथ वहां सैनिक अड्डों का निर्माण करने पर प्रतिबंध लगाने पर बात हुई | मार्च 1979 में सोवियत संघ के प्रधानमंत्री कोसिजिन भारत की यात्रा पर आये और दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग और कच्चे तेल को लेकर बात हुई | जून 1979 में मोरारजी और अटलजी सोवियत संघ की यात्रा पर गए | जहाँ भारत के साथ कई क्षेत्रों को लेकर बात हुई |

अफगानिस्तान संकट -:

1979 में पैदा हुए अफगानिस्तान संकट के समय भारत ने सोवियत संघ का साथ दिया और सूरक्षा परिषद में भी भारत सोवियत संघ के साथ खड़ा रहा | वैसे भारत किसी भी विदेशी हस्तक्षेप का विरोध करता था, पर अफगानिस्तान में सोवियत संघ की सैनिक दखलंदाजी का भारत ने विरोध नहीं जताया | भारत ने ना ही अमेरिका के प्रस्ताव का समर्थन किया और ना ही कभी खुल कर सोवियत संघ की निंदा की | राष्ट्रपति ब्रेजनेव

RRIJM 2015, All Rights Reserved

1980 में भारत की यात्रा पर आये | जहाँ भारत के साथ आर्थिक, व्यापारिक, तकनीकी, वैज्ञानिक मामलों पर सहयोग और 1300 करोड़ की सैनिक समाग्री भारत को देने की बात हुई | 1983 में सोवियत संघ की साम्यवादी दल के नये नेता यूरी आन्द्रोपोव ने भारत के साथ बनाये रिश्तों की स्थिति को पहले जैसे ही कायम रखने का आश्वासन दिया | 31 अक्टूबर 1984 को श्रीमती इंदिरा गांधी जी की अ -स्वभाविक मृत्यु हो गई |

भारत- सोवियत संघ संबंध (1984 - 1991) -:

इंदिरा गांधी की मृत्यु के बाद उनके बेटे राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने | इन्होंने भी सोवियत संघ के साथ अच्छे रिश्तों को प्राथमिकता दी | प्रधानमंत्री बनने के बाद मई 1985 में राजीव गाँधी सोवियत संघ की यात्रा पर गए और सोवियत संघ के नये महासचिव मिखाइल गोब्राच्योव के साथ 1986 से 1990 तक व्यापारिक समझौता किया | 1985 में ही वह भारत आये और भारत के साथ कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर बातचीत की और दोनों देशों ने नि:शस्त्रीकरण पर जोर दिया | जिस के कारण विश्व शांति को कायम रखा जा सके |

1989 में सत्ता पलट के कारण दोनों देशों के रिश्तों में कुछ ठहराव सा आ गया | प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने संबंधों को अच्छा बनाये रखने का प्रयास किया | बाद में बनने वाले श्री चन्द्रशेखर जी ने यह कोशिश जारी रखी |

सोवियत संघ का विघटन - 1990 में पहले खाड़ी संकट के समय भारत का दृष्टिकोण सोवियत संघ के प्रति साकारात्मक ही रहा | मिखाइल गोब्राच्योव की नीति के कारण 1991 में सोवियत संघ का विघटन हो गया | इसके साथ ही शीत युद्ध का भी अंत हो गया |

सोवियत संघ के विघटन के बाद रूस ने उसका स्थान ले लिया | भारत ने रुस के साथ सोवियत संघ के जैसे मजबूत संबंध बनाने का प्रयास किया, क्योंकि भारत किसी भी किम्मत पर अपने सबसे बडे दोस्त को दूर नहीं होने देना चाहता था | 1971 में हुई शांति, मैत्री और सहयोग संधि ने दोनों देशों के संबंधों को भविष्य में भी मजबूती प्रदान की | जिस के रास्ते पर चल कर दोनों देश अपना आर्थिर्क, सामाजिक, राजनीतिक और सैनिक शक्ति का विकास कर सकते थे | 1971 की यह संधि आने वाली सरकारों के लिए एक मार्गदर्शक के तौर पर काम करती रही है | इसके साथ ही भारत रुस के साथ मजबूत सैनिक संबंध कायम करना चाहता है | भारत और रूस के बीच एस-400 मिसाइल खरीदने का भी समझौता हुआ है | जो दोनों देशों के संबंधों को ओर आगे लेकर जाऐंगा |

संदर्भ ग्रंथ सूची -:

[1]. भारतीय विदेश नीति - भूमंडलीकरणकी ओर - राजेश मिश्रा, पृष्ठ - 410 -415
[2]. भारत की विदेश नीति - दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, पृष्ठ- 127 - 136
[3]. भारत की विदेश नीति - पी. सी. जैन
[4]. भारत की विदेश नीती - जे. एन. दिक्षित
[5]. https://www.drishtiias.com ›india-r...Web results India - Russia - Drishti IAS
[6]. https://en.m.wikipedia.org ›wiki › I...Web results India–Russia relations - Wikipedia

RRIJM 2015, All Rights Reserved